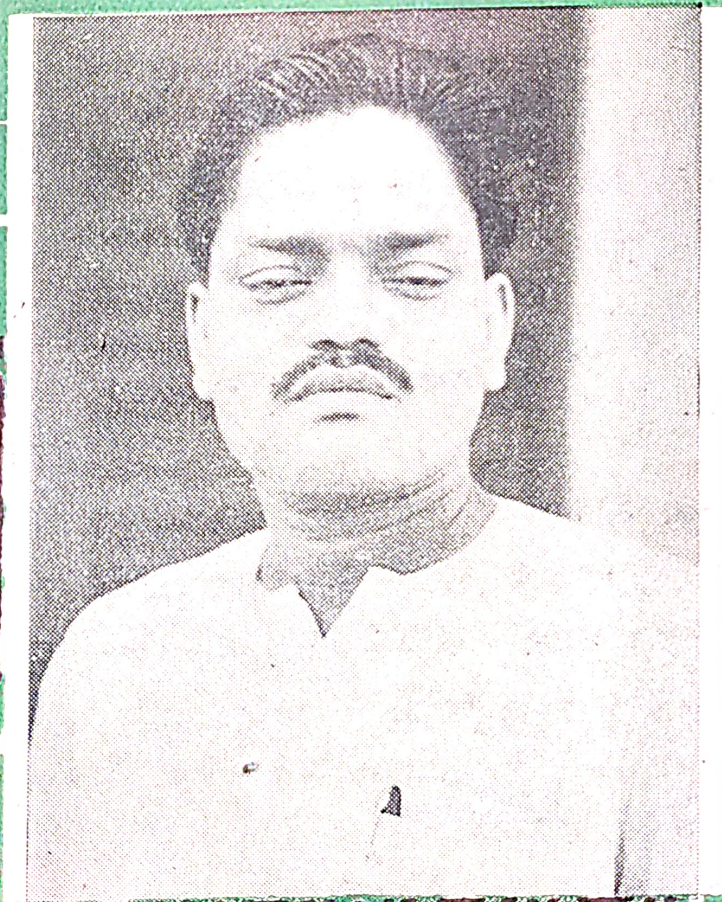


गङ्गा

मैथिली क सर्वोत्तम मासिक



फरवरी

एक प्रति
चारि
आना

१९५७

[बिहार सरकार द्वारा स्कूल, कालेज एवं पुस्तकालयक हेतु स्वीकृत]

सम्पादक

प्रो० श्रीसुरेन्द्रभा
'सुमन'श्री सुधांशु 'शेखर'
चौधरीप्रो० श्रीकृष्णकान्त
मिश्र

एक प्रति 1)

विशेषांक 11)

वार्षिक ३)

आजीवन ५१)

संरक्षक १२५)

श्रीकृष्णकान्तमिश्र

द्वारा दरभंगा प्रेस

कम्पनी (प्रा०) लि०

दरभंगामे मुद्रित

एवं प्रकाशित

प्राप्ति-स्थान

वैदेही समिति,

लालबाग, दरभंगा

कथा-पिहानी

कृष्णभक्तक कथा

दू दृश्य

हमर गप्प

रेका-तोकी

पाजेव

इयरिंग

माताक ममता

रिक्तन

श्रीराजकमल ४७

श्रीगोविन्दचौधरी ५१

श्रीकल्पनाशरण ५५

श्रीमतीजगदम्बिकादेवी ५६

श्रीरामचन्द्रभा 'सुमन' ६२

श्रीबलराम ६६

श्रीमुक्तिनाथमिश्र ६६

श्रीअष्टावक्र ७२

कविता

विनोबा

पांथक

अगहन

श्रीजीवनाथभा ५४

श्रीविभाकर ५७

श्रीप्रवासा साहित्यालंकार ५८

आलोचना

उपन्यासमे रस

प्रो० श्रीपरमानन्दभा ४५

बाल-मण्डल

लोरी

भांटाक नोकर

प्रो० श्रीशैलेन्द्रमोहनभा ७५

श्रीबचकूनमिश्र ७५

पाठकक पृष्ठ

श्रीगंगानाथभा ७६

मुख-चित्र : एहि मासमे सम्भावित मैथिली-साहित्य-परिषद्क वार्षिक अधिवेश नक
सभापति पंडितश्रीहरिनाथमिश्र, आपूर्ति एवं स्वास्थ्य मंत्री, बिहार सरकार, पटना ।

सूचना

(१) खेद सहित सूचित करै पड़ैछ जे सम्मेलनक कारणेँ कार्यालयमे व्यस्तता
एखन धरि बनले अछि एवं अनेक पत्रक उत्तर अद्यावधि नहि जा सकल
अछि । कृपालु ग्राहक, पाठक एवं लेखक सभ एहि हेतु दुःखी ओ निराश
नहि होथि । क्रमिक सभक पत्र एवं सभ विषय पर समुचित कार्यवाही भै
रहल अछि । विलम्बक हेतु हमरा सभ विवश छी ।

(२) दोसर दुःखक विषय अछि जे गत कैक वर्ष चन्दा ग्राहक सभ लग बाँकी अछि से शीघ्र पठैबाक कष्ट कैल जाय । कागत, छपाइ एवं संचालनमे टाका प्रतिमास खर्च होइछ । प्रेसक टाका, कार्यालयक कायकर्ता सबहिक दरमाहा कतेको मासक दातव्य अछि । बड़ कृपा हैत जे अपन बकिओता चन्दा पठैबाक कष्ट करी।। मासमे १) मात्र हमर भित्ता थिक—वार्षिक ३ टाका मात्र । ई चन्दा बेसी तँ नहि बुझना चाही । समिति दिसिसँ कोनो त्रुटि आदि हो से कृपया ओकरा हेतु विचारादि लिखो, अप्रसन्न नहि होइ ।

(३) शीघ्र पत्रोत्तरक हेतु ग्राहक सभ अपन ग्राहक - संख्या अवश्य लिखथि अन्यथा उत्तरमे विलम्ब हैब अनिवार्य ।

(४) जे महानुभाव सम्मेलनक पूर्ण सदस्य वा प्रतिनिधि एवं स्वागतसमितिक सदस्य छलाह तथा कोनो कारणवश सम्मेलनमे उपस्थित नहि भै सकलाह से कृपया अविलम्ब १।) (पूर्ण सदस्य वा प्रतिनिधिक निमित्त) ओ ॥=) (स्वागत-समितिक सदस्यक निमित्त) अग्रिम डाक-खर्च पठा कै सम्मेलन मध्य प्रकाशित सभ सामग्री मंगा लेथु अन्यथा सामग्रीक संख्या दिनानुदिन कम भै रहल अछि । कार्यालयकेँ तकर उत्तरदायित्व पछाति नहि रहतैक । अधिकार-पत्र (Authority Letter) पठा कै कार्यालयसँ ककरो मार्फत सेहो सामग्री मंगौल जा सकैछ ।

(५) 'वैदेही' ग्राहक जनिक वार्षिक चन्दा दिसम्बर '५६ वा ओहिसँ पूर्वहि समाप्त भै गेल छन्हि से टाका तुरत पठा देथि । कारण १६५६क विशेषांक (जे फरवरीमे पठौल जैत) तनिकहि जैतन्हि जे कार्यालयमे अपन वार्षिक चन्दा (१६५६ क) पठा चुकल छथि ।

(६) 'वैदेही'क १६५७ क अग्रिम चन्दा पठाबै काल मनीआर्डर कूपनपर स्पष्ट लिखल जाय जे '१६५७ क चन्दा जा रहल अछि ।' ग्राहक-संख्या पैकेटक लेबुलपर जे लिखल रहैछ तकर उल्लेख अवश्य कैल जाय ।

(७) 'वैदेही' नहि प्राप्त हैबाक सूचना कार्यालयकेँ डिलेभरी पोस्टआफिसक प्रमाण सहित प्रत्येक मासक २५ ता० धरि अवश्य ऐबाक चाही अन्यथा कोनो कार्यवाही नहि हैत ।

(८) पत्र-व्यवहारमे सर्वदा ग्राहक-संख्या जे पैकेट पर अंकित रहैक से लिखी । १६५७ मे प्रत्येक ग्राहकक संख्या बदलि गेलैन्ह से ध्यानमे राखी ।

—श्रीकृष्णकान्तमिश्र, मंत्री, वैदेही समिति, दरभंगा

उपन्यासमे रस ओ सत्यताक समावेश

नाटक जकाँ उपन्यासहुक सबसँ अधिक ओ घनिष्ठ सम्बन्ध जीवनक सङ्ग अछि । उपन्यासमे मुख्यतः इएह देखाओल जाइछ जे पुरुष ओ स्त्रीगणक विचार, भाव एवं पारस्परिक सम्बन्ध केहन अछि तथा कोन-कोन कारण अथवा प्रवृत्तिसँ प्रेरित भए ओ लोकनि केहन-केहन कार्य करैत छथि ।

उपन्यासक परिमाणन अवयव काव्यान्तर्गत कएल जाइछ । वर्तमान शताब्दीमे पाश्चात्य साहित्यहि जहाँ भारतीय भाषा-साहित्यहुमे काव्यक एहि अङ्गक तादृश प्रगति ओ प्रचलन बढि गेल अछि जे ई साहित्यमे अपन एक स्वतन्त्र अस्तित्व दइ कए लेलक अछि । एहि कोटिमे साधारणतः कल्पनाप्रसूत सम्पूर्ण कथा-साहित्य आवि जाइछ जे गद्य-शैलीमे व्यक्त करल गेल हो । काव्यक एहि रूप (-उपन्यास) द्वारा मानव जीवनक कल्पना-रङ्गानुरञ्जित आनुषङ्गिक कथाक पूर्णाभिव्यक्ति उपस्थित कएल जाइछ । नाटक जकाँ उपन्यासहुक सबसँ अधिक ओ घनिष्ठ सम्बन्ध जीवनक सङ्ग अछि । उपन्यासमे मुख्यतः इएह देखाओल जाइछ जे पुरुष ओ स्त्रीगणक विचार, भाव एवं पारस्परिक सम्बन्ध केहन अछि तथा कोन-कोन कारण अथवा प्रवृत्तिसँ प्रेरित भए ओ लोकनि केहन-केहन कार्य करैत छथि । सङ्ग्रह ओतए ईहो देखल जाइछ जे स्वप्रयत्नमे ओ कोन प्रकारेँ सफल वा विफल होइत छथि आओर तत्फलस्वरूप हुनका लोकनिमे कोन-कोन तरहक मनोविकार उत्पन्न होइछ । कोनो विशेष सिद्धान्त अथवा विचारक प्रतिपादनक उद्देश्ये तँ बहुत कम उपन्यास लिखल जाइछ, परञ्च तथापि सभ उपन्यासमे किछु ने किछु विशेष विचार वा सिद्धान्तक समावेश अनायास भए जाइछ ।

ई निर्विवाद सिद्ध अछि जे सर्वविध काव्यक वैशिष्ट्य इएह रहैछ जे ओ पाठक वा श्रोतामे विभिन्न मनोवेगकेँ उत्तेजित करैत ओकरा हृदयकेँ अ लौकिक आनन्दोत्प्लवित करए । इएह मनोवेग अथवा भाव साहित्य-शास्त्रमे रसक मूलमे कहल जाइछ । उपन्यासहुमे तत्सञ्चारक आवश्यकता रहैछ, अन्यथा ओकरा अभावमे उपन्यास नीरस एवं प्रभाव-शून्य भए जाइछ । इएह कारण अछि जे उपर्युक्त मनोवेगक उपस्थिति वा अभाव ततेक प्रत्यक्ष भए जाइछ जे साधारण पाठक ओकर अनुभव विना कएने नहि रहि सकैछ । रसस्थिति सेहो लेखकक अनुसार प्रत्येक उपन्यासमे भिन्न-भिन्न रूपेँ रहैछ । कोनो लेखकमे शृङ्गार, वरुण आदि रसक सञ्चार करबाक शक्ति अधिक रहैछ तथा हास्य-रसक कम; लेखकक अवस्था पुनः एकदम विपरीत होइछ ।

किछु लेखक एतादृश होइत छथि जे केवल भीषणे मनोविकार उत्पन्न करबामे
 सिद्धहस्त रहैत छथि; अन्य किछु पुनः एहन होइत छथि जे न्यूनाधिक मात्रामे
 सर्वविधि मनोविकार उत्पन्न कए सकैत छथि । अतः कोनो उपन्यास पढ़बाक
 समयमे एहि बातक ख्याल राखक चाही जे ओ उपन्यास वा उपन्यासकार
 कहाँ धरि कोन मनोविकार उत्पन्न करबामे कतबा सफल भेल अछि ।
 आब ई विचारणीय थीक जे उपन्यासमे सत्यता वा वास्तविकताक कहाँ धरि
 सम्भावना रहैछ । कोनो उपन्यासक जीवन-सम्बन्धी तत्त्व सभक परीक्षण
 करबा काल सबसँ पहिने एहि बातक ध्यान राखक चाही जे ओहिमे सत्यताक
 मात्रा कहाँ धरि अछि । परञ्च ओ सत्यता वैज्ञानिक सत्यतासँ सर्वथा भिन्न
 आओर कवि-कल्पनामे उपलब्ध सत्यताक समान हएत । हम ई नहि कहि
 सकैत छियैक जे उपन्यासमे केवल मिथ्या एवं कल्पित गल्प सभ भरल रहैत छैक ।
 आओर ओहिमे सत्यताक सन्निवेश रहितहि ने छैक । हँ, तखन एतवा अवश्य
 जे कोनो उपन्यास आद्यन्त वास्तविक अथवा सत्य घटनाक आधार पर नहि
 रहैछ, ओकर अधिकांश विषय उपन्यासकारक कल्पनोद्भूत रहैछ । परञ्च ई बात
 रहलहु पर ओहिमे गूढ़ एवं व्यापक सत्यता अन्तर्हित रहैछ जे विशेष प्रभाव-
 शालिनी आओर शिक्षाप्रद होइछ । कविताक विवेचनमे जाहि कवि-कल्पनामे
 सत्यताक उल्लेख होइछ उएह सत्यता उपन्यास-आख्यायिका आदि मे वर्तमान
 रहैछ । जे किछु कहियो भेल रहए वा नित्य होइत हो वएह केवल सत्य नहि
 थीक, अपितु जे किछु भए सकैछ ओहो सत्ये थीक । काव्य, नाटक, उपन्यास
 आदि ज्ञानक साहित्य नहि, सत्यक साहित्य अछि । अर्थात् ओहिमे ज्ञानक
 बदलामे एक एहन शक्ति होइछ जे लोककेँ किछु विशेष बातक ज्ञान करबैछ ।
 एहन पुस्तक सभमे जे कल्पित शक्ति होइछ ओ सर्वदा एकरस रहैछ । ज्ञान-
 साहित्य (विज्ञान) जकाँ ओहिमे कहियो कोनो परिवर्तन, परिवर्द्धन वा संशोधनक
 आवश्यकता नहि होइछ, यथा—पञ्चतन्त्र, कादम्बरी, शकुन्तला आदिमे जे
 सत्य प्रतिपादित अछि ओहिमे कहियो कोनो अन्तर नहि पड़ि सकैछ ।
 उपन्यासमे जे सत्यता होइछ ओ वास्तवमे ओकर वास्तविकता अथवा सम्भा-
 वनासँ सम्बद्ध रहैछ । जे बात होइत हो वा जकर सम्भावना कोनो रूपेँ
 होइक ओकरे उपन्यासमे स्थान भेटबाक चाही । सङ्गहि एहन कोनो बाधा
 सेहो नहि होमक चाही जाहिसँ लेखक अपन कल्पना-शक्तिक पूर्णतया उपयोग
 करबामे बाधित हो । कवि, लेखक वा चित्रकार आदिकेँ कल्पना एवं वास्त-
 विकता दूनूक आवश्यकता समान रूपेँ होइछ । ने छुछ कल्पनहिसँ आ ने
 केवल वास्तविकतहिसँ निर्वाह भए सकैछ । अतः उपन्यासादिमे ई ध्यान अवश्य
 रहक चाही जे वास्तविकतामे कल्पनाक आओर कल्पनामे वास्तविकताक
 सम्मिश्रण सर्वथा आनन्ददायक एवं शिक्षाप्रद भए सकैछ ।

कृष्णभक्तक कथा

आ' दोसरे राति, गणेश श्रीकृष्ण आ राधिका'क युगल-मूर्ति गामसँ दू कोसपर कोसिका'क धारमे भसा अपलाह । भसनइत काब हाथ जोड़ि क' बजलाह—हे कृष्ण, हे राधे ! तोहर पूजा-अर्चनासँ हमरा कोनो लाभ नई मेल । नेना छलउँ, तखनहिसँ तोहर युगल-मूर्ति देखि-देखि मोनमे लालसा होइत छल—हमरो लग अहिना हमर राधिका ठाढ़ हेती । मुदा, से नई मेल । हे कृष्ण, हे राधे, आव तौ जा'ह ।

प्रश्न मात्र एतबे जे रेसमी आव किसना बरइ'क परिवारमे रहए अथवा नई ? कथा मात्र एतबे जे किसना बरइ'क गृहणी रेसमी एसकरे, गाम'क नबका मिडिल स्कूल'क हिन्दी-अध्यापक'क संगे सोनपुर-मेला देखए चलि गेलि छलि । घुरलि एसकरे, तीन मास'क पश्चात्.....

वारांश मात्र एतबे जे कोनो न'ब गप्प नई । ई सभ त' आजु'क प्रगतिशील जन-जीवन'क शोभा थीक, सरसता थीक, माधुर्य्य थीक ! गाम'क एक-मात्र कृष्ण-मन्दिर'क एकमात्र पुजेगरी श्रीगणेश (गाम'क दुर्मुख युवक-समुदाय जनिका 'गोबर-गनेस' कहइत छलइन) डाँड़मे रामनामी गमछी बन्हइत बजलाह—रेसमी कोनो अपराध नई कएने छइथि । ई त' अपना देस'क परम्परा थीक । गौतम-पत्नी अहिल्या'क कथा त' जनिते छी । द्रौपदी त' पाँचो पाण्डव'क सरिपहुँ पत्नीए छलीह ।

ब्रज'क सभ गोरी योगिराज कृष्ण'क संगे रास रचइति छलीह । राधा-रानी नित्त भगवान'क मुरली सुनइति देरी, अप्पन पति-देवताकेँ सुतले छोड़ि, कुंज-भवनमे अभिसार करए विदा भ' जाइत छलीह ! नई, नई, रेसमी'क कोनो टा अपराध नई.....

मुदा, गणेश'क तर्क सुनइबला ओइठाम किओ नई छल । तई ओ मुदित मोने गाबए लगलाह :

सखि हे, केशीमथन मुदारम् !

साँझ खन भगवान'क आरती कएलाक उपरान्त, मन्दिर'क केवाड़ भीतरसँ बन्द क'क', पलथी-मारि मूर्ति'क सोझामे बइसि, गणेश पुछलथिन—योगि-राज, रेसमी'क विषयमे हम उचित निर्णय कएलउ की नई ? रति-अभिसार त'कोनो पाप नई ? भगवन्, अहाँ'क क्री विचार अइछ ?

नृत्य-मुद्रामे, प्रणयोन्मादिता राधिका'क दक्षिण-भागमे ठाढ़, मुरलिका बजवइत श्रीकृष्ण मुस्काइत बजलाह :

नई भक्तवर, अहाँ'क निर्णय एकदम अनुचित भेल । साक्षात् लक्ष्मी'क प्रति-रूपा, राधा-रानीसँ अहाँ ओइ पति-पत्नी'क तुलना किअएक कएलउ ?

गणेश अप्पन अपराध मानि, श्रीमती राधिका'क दुन्नू पर बाँहिसँ छानि कानए लगलाह । भावावेशमे, भावुकता'क महावेगमे ओ किछु बाजि नई सकलाह । भरि राति ओहिना पएर पकड़ने, ओहिना भोकाड़ि पाड़िक'कनइत, भूखले-पिआसल पड़ल रहि गेलाह ।

निन्न भ' गेलइन आँ भरि राति स्वप्नमे देखइत रहलाह—नालन्दा'क भग्न स्तूप, बोधगया'क मन्दिर'क आभासय स्वर्ण-कलश काशी'क विश्वनाथ'क शिवलिंग, प्रयाग'क त्रिवेणी—संगम आँ संगममे स्नान करइत असंख्य धर्म-प्राण स्त्री-पुरुष

भक्त त' स्वप्नोमे धर्म-स्थले देखइत अइछ !

सद्यः ब्राह्मी मुहूर्तमे, गुजराती महीस'क दूध'क खोआ'क भरल बट्टा सन रेसमी श्रीकृष्णकेँ चढ़एवाक हेतु टटका पुष्प'क आठ-दस-टा माला आ दू ढोली पान ल'क' आएलि ।

गणेश तावत् उठि गेल छलाह आ गमछी पहिरने शरीरमे कोनो जजमान'क देल सुच्छा कइतेल'क मालिस क' रहल छलाह ।

हँसइति रेसमी बाजलि—पुजेगरीजी, हमर धरम बाँचि गेल । जँ बरइवा घरसँ निकालि दितए त' कोन गति होइते हमर ! ओ सार मस्टरवा त' चारि दीन रस ल'क' भागि गेल

गणेश अन्वय कर' लगलाह..... राधा-रानी'क अभिसार—श्रम-स्वेद-सिक्त मुस्कान आ एहि बरइ कुलचधू'क मुस्कानमे कोनो अन्तर नई, अन्तर एतवे जे रेसमी'क मुस्कान बेसी प्रवित्र, बेसी हर्षदायक, बेसी उन्मादक !

जखन रेसमी भगवान'क हेतु फूल-माला आ भक्त'क हेतु पान'क ढोली आ दू पुड़िया नेपाली गाँजा राखि क' चलि गेलि, त' स्वयं स्नान करमा क' पश्चात् श्रीकृष्ण आ राधा-रानीकेँ सह-स्नान करबइल, गणेश बजलाह—देवाधिदेव, भगवतो राधे, ई रेसमी की हमर राधा-रानी नईं भ' सकइति अइछि ? अज्ञात् ईष्यासँ विकल होइति राधा बजलीह—देवता'क अनुकरण जुनि करू, भक्त श्रेष्ठ ! अहाँक हेतु ई महापाप हएत ।

गणेश क्रोधित भ' गेलाह—देवि अहाँ निसरइति छी । हमरा व्यास, वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, कपिल, अग्नि, जमदग्नि, मारुत सभ'क कथा मोने अइछ । की ई ऋषि-मुनि सेहो देवते छलाह ? श्रीकृष्ण-राधिका'क प्रकोष्ठ-स्नान समाप्त भ' गेल छल, आ श्रीकृष्ण योगमुद्रामे समाधिस्थल भ' गेल छलाह, तईं भक्तकेँ कोनों उत्तर नईं भेटलइन ।

ई कृष्ण-मन्दिर, गणेश'क पिता'क स्थापना कएल थीक । बहु पढ़्य महात्मा छलाह गणेश'क पिता । युगल-जोड़ी'क परम उपासक । गीत-गोविन्द पढ़इत काल हिनका आँखिसँ अश्रु प्रवाह होमय लागइन । पिता'क गोलोक-वास'क उपरान्त चौदहे वख'क वएसमे मात-पित विहीन गणेश एहि मन्दिर'क सर्वाधिकारी पुजेगरी भ' गेलाह । आर सभ जमीन—जैदाद त' पिता'क जोविते स्वाहा भ' गेल छलइन ।

अस्तु, फेर जखन साँझमे रेसमी अपनहिं हाथें चारि खिल्ली पान ओ भाँग'क भरल लोटा ल' क' मन्दिरपर आएलि, त' गणेश तृप्त-परितृप्त भ' गेलाह । फागुन'क हरिअर वसातमे मोन उधिआबए लगलइन । मोन भेलइन जे मन्दिरमे राखल मूर्ति हटा दी, ओ रेसमी'क कान्ह पर हाथ राखि स्वयं अपनहि ओहि स्थानमे टाढ़ भ' जाइ ।

भाँग पीबि लेलइन, त' रेसमी बाजलि—महाराज, राति खन हम ललित-वावू'क दलान पर बिदेसिया'क नाच देख' गेल छलउँ । तँकरे दुअरि आई बरइवा बहु भारि मारने अइछ । खड़ाम, ईटा, जारनि, लाठी जे हाथमे छलइ, तहीसँ मार' लागल । महाराज, आव हम एकरा संगे नईं रहब ।

अहाँ अपना भगवानसँ कहियउन, हमर कोनो रस्ता निकलि देथु ।

आ, एहि राप्प'क कनीकाल'क पश्चात् रेसमी चलि गेलि ।

रातिमे जखन श्रीकृष्ण ओ राधिका भोजन करइत छलाह, त' भक्त पुछलथिन :

सुरलीधर, राधारमण, हमरापर कोधित छी त' रहू, मुदा रेसमी'क कोनो समाधान क' दिअउक !

ओही दिन,

रातिमे रेसमी गामसँ निपत्ता भ' गेलि !

आ' रातिमे रेसमी गामसँ निपत्ता भ' गेलि ।

किसना बरह कानिते रहि गेल, मुदा ओ घूमिक' नईँ आएलनि ।

ओ दोसरे राति,

गणेश श्रीकृष्ण ओ राधिका'क युगल-मूर्ति गामसँ दू कोस पर कोसिका'क धारमे भसा अएलाह । भसबइत काल हाथ जोड़िक' बजलाह—हे कृष्ण, हे राधे ! तोहर पूजा-अर्चनासँ हमरा कोनो लाभ नईँ भेल । नेना छलउँ, तखनहिँसँ तोहर युगल - मूर्ति देखि - देखि मोनमे लालसा होइत छल—हमरो लग अहिनीँ हम्मर राधिका ठाढ़ हेती । मुदा, से नईँ भेल । हे कृष्ण, हे राधे, आव तो जा'ह ।

आब गणेश गाममे पान-बौड़ी'क एकटा छोटछिन दोकान खोलने छइक । सम्भवतः एहि प्रत्याशामे जे सायत, रेसमी घुरि आवए.....

—प्रेम ओ स्वर्ण बन्धन थिक जाहिसँ समाज परस्पर बान्हल अछि ।

—गेटे

—पीतड़िकेँ सोन कहि कऽ खलौलासँ ने तँ सोनाक गौरव बढ़ैछ आ' ने पीतड़ियेक ! संगहि पीतड़िक अपन स्वत्य समाप्त भ' जाइछ ।

—शरत्चन्द्र चट्टोपाध्याय

दृश्य

एक

फाल्गुनऽक प्रथमे सप्ताह एवं ऋतुराजक प्रथम चरण । किञ्चित अवकाश भेटल तऽ हम बाबा बूढ़ानाथक दर्शनार्थ भागलपुर पहुँचलहुँ । कन्याक द्विरागमन उपस्थित छल, वस्त्रादिक सस्तीक हेतु भागलपुरक बाजार प्रसिद्ध अछि । विचारल 'पशुपतिक दर्शन आ सुकठीक बनीज'—किछु कपड़ो कीनब, सुभीता पड़त, एवं बूढ़ानाथ बाबाक दर्शनो हयत ।

दोसर दिन अपराह्नमे हम भागलपुर जंक्सनसँ बहरयलहुँ, चिन्तामे रही जे कतय जा अँटकी, तावत् हठात् पाछाँ सऽ केयो हमर दुनू आँखि दाबि देलक । सोचय लगलहुँ एहिठाम हमर एहन अन्तरंग के अछि ? कतिपय नाम मुँह सँ बहिर्गत भेल, परन्तु सभमे 'दुहु' प्रत्युत्तर भेटैत गेल । अन्ततः हमर हुनक हाथ ढील पाबि अपन चक्षु उन्मुक्त कयल, देखल ई हमर एक छोट सादू मन्द-मन्द मुसकी दय रहल छथि । देखितहि हृदयऽक आवेशमे किछु बिहाड़ि उठल—औ अँही छी !! कहि दुनू गोटे आलिङ्गनमे बद्ध भय गेलहुँ । पुनः किञ्चित अवकाश भेटल तऽ विना नांगड़ि पैरक से गम्भिर प्रवाह चलल जे कखनि कोना हुनक वासा पर आबि 'वृत्तोस्मि' भय गेलहुँ एकर बोध नहि भय सकल । हुनक कन्या आबि प्रणाम कयलक, पैर धोयबाक हेतु एक लोटा जल एवं तौलिया रखितहि छलि कि एम्हर 'वाजिद अलीशाहक पाकेट स बहरायल एक दुटकही' । हम इषत्-लज्जाक नाट्य करैत ओ नोट बालिकाक हाथमे दय जिज्ञासा कयल—की दाइ, माय निकै छथि ? यावत् हमर सादू महाशय 'ई की', 'ई की'—कहैत रहलाह, हम पद-प्रक्षालनार्थ आगाँ बढलहुँ । कर्णगोचर भेल परदाक अन्तरिक्षसँ गाराँ दाबलि ध्वनि—हए, बीनू, पुछहुन्ह कुशल-मंगल । हमर बहिन कोना छथि ?

हमहुँ सुना कय उत्तर देल—बहीन कोना रहतीह ? दिन कऽ ठाढ़ि, राति कऽ सूतल ।

से नहि—विहुँसल प्रभू भेल ।

निकै छथि कि नहि ?

नीक रहितथि तखनि आहाँ कोन दरबार छल ? एना छिछिन्नायल कियैक अबितहुँ ?

ऊँह, से नहि—समत जिज्ञासा छल। हए, पुछहुन गऽ जे कोना मोन पड़लियैन्ह एतेक दिनपर ?

हमर त्वरित उत्तर छल—मोन पड़बाक कथा की ? सामुरक बाट सारिक ठाठ, बताहो के नहि बिसरैत छैक, काठोपर नहि ।

पुनः हम साढ़ूकेँ—ओ साढ़ू, ई भरि गाम डरपयवाली छौड़ी के आहाँ कोन जड़ी सुंघावल जे एहन व्यवस्थित बना देल ।

वाहि रे बाहू...एतबहिमे पुनः कर्णगोचर भेल—प्राचीन-प्राचीन गारिक श्रोत यथा 'संकुचित मुखकाला'...बोतलसँ भुभुआ-भुभुआ कय बहिर्मुख भय रहल हो ।

हास्यक पारावारमे उत्प्लावित होइत आनन्दक कतिपय घण्टा व्यतीत भेल । बीचमे एक बेर गप्प उठल—कनेक भांग हेतैक ? हम आजन्म भांगऽक बाट-पार नहि उतरल रही, विनीत भावें आस्वीकारक मुद्रा धरल, परन्तु आग्रहक जोर हमर साढ़ूक शब्दसँ एही रमणीक हवा-भाव एवं जबरदस्तीमे एतेक वेशी छल जे हमर नहि-नहि पराभूत भय अपन शब्दार्थ पर्यन्त ठीक प्रतिकूल भावें बदलि लेलक । कर्मलपत्री शरबतऽक व्याजे कहू, या भाल-पूआ जलखइक व्याजे कहू हम बाबाक बूढ़ी एहि परिमाणेँ उदरस्थ कयल जे भोजनक काल अवैत-अवैत चक्षुद्वय विभोर भय उठल, मस्तिष्क घूमय लागल, सर्वाङ्ग प्रज्वलित भय उठल । आस जे मान्तेना उठबैत बजलहुँ—देखू, तऽ ई की कयल ? भांग कतेक लागि गेल ? आहाँ के तऽ बूझि पड़ैत अछि जे सदिसऽन लगले रहैत अछि ?

इपत् हास्ये उत्तर भेटल—हम कहाँ पीबैत छी ?

नहि पीबैत छी तऽ एतेक उभितने कियैक जाइत छी थारोमे ? हमर मधुर आक्रोश छल । जानि बूझि कय अपनहि छुता रहलि छी । हमरा की ?

से नहि हैत, एक-एक टा कऽ सभ खायक पड़ल । से हम कहि दैत छी, नहि त हम ओहिना कण्ठमे बान्हि देब ।

• पेट तऽ आहाँक बातेसँ भरल छल, ताहिपर एतेक व्यञ्जन ! वाह रे वाह...।
बहाउ गऽ अपन बहिनकेँ ! सारि हँसो कैलनि ।
हाँ हा हा हा, आहाँ त लऽगहि छी...।

तावत् हमरा बूझि पड़ल जे जतेक लायल - पीयल रह्य से समग्र एकहि बेर
बहिभूँत हयबाक हेतु जोर लगा रहल अछि । सारि साहिबा 'हाँ हाँ' वजितहि
रहलीह हम हठात् आसनसँ उठि गेलहुँ जेना-तेना हाथ धोयल सादू हाथ देह
पकड़ि अपनहि शय्या पर पाड़ि देलन्हि । भान भेल, यथा अन्तरिक्षसँ केयो
बाजि रहल अछि—एक तऽ शरबते भांगक, ताहिपर मालपूआमे भांग पुष्ट !
बेचारे के कहियो भांगक अभ्यास नहि । आव देखू हिनका केहन कष्ट भय
रहल छैन्हि ? नहि, ई उचित नहि !
उत्तर कामिनी कंठसँ बहरायल—आइ तऽ हमरो कनेक लागि गेल अछि !
आहाँ अपन कहू ?

नहि, नहि हमरा की लागत ? जे हो कनेक रमकी आयल छल से हिनक हालत
देखि पड़ा गेल । जाउ ! अहूँ भोजन कय सूति रहू । हिनका ठंडामे
सुता दैत छियैन्हि निशा दूटि जयतन्हि ।

पाछाँ बूझि पड़ल यथा केओ उठा कय बाहर चलबाक प्रेरणा कय रहल
अछि, परन्तु शरीर तेहन भारी एवं विवश भै चलल छल जे टससँ मस
नहि भेल । 'उँह, आँह' कय ओतहि पाथरक शिल्ल जकाँ पड़ले रहि गेलहुँ ।
कखनहुँ बूझि पड़ैत छल जे बहुत पैघ श्यामघनक सातम पाटसँ उपर केओ
उड़ाने जा रहल अछि, पुनः यथा ओहिठामसँ केयो अकस्मात् भूमिपर
पटक दिये ! एहि उठा-पटकमे दोहरि तानि हम एहन अवस्थामे पड़ल रही
जकरा ने कहि सकैत छी निद्रित आ' ने जागृत । चक्षु-मुदित परन्तु चल-चित्र
द्रुतवेगेँ चालित !

दोसर

एक बेर बूझि पड़ल, हम एसगर नहि छी, पीठसँ सटल केयो आर सुतलि
अछि ! कखनहुँ हमर हाथ ओहि अवयवपर पड़ि जाइत छल कखनहुँ अन्ये
मृणाल बाँहि हमर अवयवपर । प्रातः कालक वायु थपकी देलक, तंद्रा दूटल । मस्तिष्क
भारी छल । सोचल, कतय छी ? चारू कात आँखि मिड़ैव ताकल एक-एक

कय सभ वास्तविक क्षेत्रमे स्पष्ट भय उठल । पीठ दीस देखल, ई के सूतल छथि, वेहोश विभोर ! ओढ़ना हटा कय निहारल, मालपूआ जबदस्ती खोआ-बय वाली स्वयं !

पश्चातापक तेहन बिहाड़ि मस्तिष्ककेँ आन्दोलित करय लागल जे किछु विचारबाक अवकाश नहि भेटल । हठात् ओढ़ना फेकि खाटसँ नीचा फानि गेलहुँ, अपन सूटकेश उठा चुप्पहि कोठरीसँ बहराय लगलहुँ, पाछाँसँ श्रवण-गोचर भेलि तन्द्रिल अलसायल बोली—उँह, ओढ़ना कियैक हटा देलहुँ ? ओढ़ा दीयऽ...

एम्हर आव साहस कहाँ जे पुनः ओहि दीस दृष्टिपात् करी ? झटकारल डेग आगाँ बढ़ल, मस्तिष्कमे प्रश्न उठल—दोष ककर ? हमर ? की हुनक ? की भांगक ?

विनोबा

श्रीजीवनाथभा

एक भुरकुट - बूढ़ गजसँ सिंह शत-शत कपि रहल अछि
विनत मुख बनि मूक दुःखक पाँकमे पड़ि चपि रहल अछि
दिग्गजक हम दाँत तोड़ब पर्वतहुकेँ ढाहि फोड़ब
छल एहन जनिकर प्रतिज्ञा तनिक मदद त खपि रहल अछि
संकुचित त्वच दाँत टूटल गजक अङ्गक सन्धि छूटल
लक्षजनविच गर्जनास्त्रक मन्त्रटा ओ जपि रहल अछि
शोक अनुपम कूटनीतिक चक्रव्यूहक वक्रभीतिक
साम्पयोगक एक गतिसँ पारसीमा टपि रहल अछि
एक दिश 'आनन्दधारा' अपर दिश रोटी नारा
विषमताक अभद्रेखा पएर तरमे भपि रहल अछि

हमर गप्प

अपना हमरा चाहे जे हुआऽ अनकर कष्ट देखन असह्य भै जाइत अछि । ई की ? एकटा तुच्छ फतिंगाक हेतु यदि हमरा जुआयल गहूँमनक तपतपाइत जीह कय हाथसँ पोछऽ पड़ैत त सेहो हमरा सहर्ष स्वीकार होइत । तखन ई त मामूली सवा दू हाथक हरहरा रहैक । देखू ? फेर फूसि बजना गेल ।

हे ! हमर गप्पक विश्वास नहि करू ।

कि जानि हमरा फूसि बजबामे बड़ कौतुक बुझि पड़ैत अछि ।

आइ भिनसर हमरा ओतऽ एकटा साँप मारल गेल । हरहरा छलैक, मुदा हम कहलियैक—गहूमन साँप । नामहिसँ जेना देह सिहरि उठैत अछि । डरक लेल कोनमे जाइत छी । मुदा यदि कोनो-कोनोमे ओ हुए ? तखन तऽ विनु रामक नाम लेने उपाय नहि । फेर पड़ा आन ठाम बैसैत छी ।

हँ, तऽ की कहैत रही ? साँपक हमरा बड़ डर होइत अछि । साँप वस्तुएँ सैह थीक । अहूँसँ यदि भय नहि करब, तऽ करबे कथी सऽ करब ?

आइ भिनसरमे अपन फुलवारीमे कुर्सीपर बैलि अकबारक पन्ना उनटबैत रही । हम नित्य अकबार उनटबैत छी, आर पढ़ैत छी केवल सिनेमाक गप्प । मुदा से लोक के से कियाक कहियौक ? कहैत छियैक, नित्य अखबार पढ़ैत छी । कियाक ? लोक बूझऽ जे 'फरवर्ड' छी ।

ओही काल देखलियैक एकटा बेंग कुदकि-कुदकि कऽ जा रहल अछि । हरियर बरसाती दुर्वापर, पीयर-कारीक चितकवरा बेंग बड़ सोहाओन लगैत रहैक । जेना वसुन्धरा के घेघ फुटि आयल छन्हि आर ओकर कुदुक्का हुनकर स्वांसक उभार-निभार थीक । एहन कल्पना हम करऽ लगलहुँ । ततवेमे देखैत छी एक सवा दू हाथक कोनो अलभ्य धातुक 'जिनिस' । नीक जकाँ देखलियैक । बुझि पड़ल जेना घेघ फुटि जयवाक कारणेँ वसुन्धराक 'ग्रीमहार' टूटि खसल अछि ।

अहा ! कतेक सुन्दर लगैत छैक । हम ई सोचितहि रही कि ओ 'ग्रीमहार' कोनो टोनाक बले दुइ बेर सऽह-सऽह करैत तड़ाक अपन नाङ्गड़िपर ठाढ़ भय गेल ।

रौऽबा !! ई साँप ! सुच्चा गहुँमन । केयो हमरा बचा रौ—बचा । हम अपने कुर्सीर लपकि कऽ ठाढ़ भ गेलहुँ । हमर चीत्कार सुनैत मात्र सभ नोकर दौड़ल आयल । कहलक—हरहरा थिकैक ।

बुड़ि कहां के । हम दाँत किचैत बजलहुँ—फतिंगे कियाक नहि थिकैक । माऽऽर । ओ साँप बेंगक एक टांग अपना मुंहमे धऽ देने छलैक । बेंग बेचारा किकिया रहल छल । मुदा करइ छी की ? हमर मोन ई देखि कय कोना दन हुअऽ लागल । सर्वाङ्ग कापि रहल छल । मुदा करइ छी की ? जुत्तोसँ जे मारितियैक से जूता तऽ नीचा घासपर छल । उठबऽ जाइ त के जाने यदि ओ 'सद्यः काल' बेंग के छोड़ि हमरेपर चोट कऽ दिये । नहि बाबा ? नहि, बाज छी अहि धर्म कमयबा सऽ ।

नोकर सभ पर गर्जना करैत कहलियैक—मुँह की तकैत छेँ ? जूतासँ मार । हे वैह टेबुलपर राखल फुटरुलर सऽ माऽऽर । कहुना मार ।

मुदा फुटरुलर उठयबाक काज नहि पड़लैक । साँप जुत्तेक चोट सऽ खतम भऽ गेल । घामसँ हमर कुर्ती भीज गेल । कपार परक पसीना पोछति बजलहुँ—हऽ ! प्राण वाँचल । ततवेमे मां अयलीह । साँप देखि कय कहलन्हि—हरहरा केयो मारे ?

मुदा ओ निर्दोष बेंगक प्राणक रक्षाक हेतु त ओकरा मारब सर्वथा उचित भेल । अपना हमरा चाहे जे हुअऽ अनकर कष्ट देखब 'असह्य भ' जाइत अछि । ई की ? एकटा तुच्छ फतिगाक हेतु यदि हमरा जुआयल गहुँमनक तपतपाइत जीहक हाथसँ पोछऽ पड़ैत त सेहो हमरा सहर्ष स्वीकार होइत । तखन ई त मामूली सवा दू हाथक हरहरा रहैक । देखू ? फेर फूसि बजना गेल । सवा दू हाथक कत्तौ हरहरा भेलैक अछि ?

पथिक

श्रीविभाकर

एक पथिक

गन्तव्य देश - दिश

नहु—नहु

अपन बढ़ल जाइत अछि ।

खिन्न बेचारा

तृषित-लुधित पुनि

श्रान्त जीर्ण परिधान शीर्ण छै;

सदिखन आशा प्रेम आर छै

एकमात्र पाथेय ।

लक्ष्यक सुधि सङी आ' ओकरा

कहुना किछु-किछु सङ्ग पुरै छै ।

औ ! तथापि की भेलै ?

कि उठलै अन्हर एकटा ।

तड़ - तड़ाइत गर्जइ घन नभ मे

गाछ-वृक्ष कत खसै

खेचर'क खोंता भू-पर ।

तमसावृत संसार

बिजुरि—बिच लौक्य कौखन ।

पड़ल बटोही अछि पाँतर मे

निस्सहाय, अडनाय सुपथ पर ।

ओकर न बचतै देव ! प्राण की ?

वज्र'क हेतै प्रहार ?

त रक्षा करवै अहुँ की ?

अगहन

श्रीप्रवासी साहित्यालंकार

कतहु भरल रासि, कतहु कटाएल खेतक देह उधार छै ।
जन हरवाहक घर आँगन मे धनकटनी केर तार छै ॥

चहल-पहल अछि अहल भोर सौँ मजदूरक घरबार मे,
सीतक भिजल बसात आइ सिंहकइए भरि संसार मे;
दाउन जोतने मस्त घुमइए कोमल विरहाक तान मे;
टप, टप ओस चुबए खोपड़ी पर गिरहस्तक खरिहान मे;
उगल भुरुकवे जेकाँ भाग्य जनु जकरो दिवस पहाड़ छै ।
जन हरवाहक घर आँगन मे धनकटनी केर तार छै ॥
हँड बान्हने गावि रहल अछि कृषकक कन्या आरि पर,
अमित चान जनु उतरि अवनि तक चलइत हो तरुआरि पर;
अगजग जगमग इनरपरी सब उतरल गमगम धान मे,
चर-चाँचरक सोहाग भरल छै इनरासनक समान मे;
वर्तमान केँ बिसरि गेल जे ककरा कतेक उधार छै ।
जन हरवाहक घर-आँगन मे धनकटनी केर तार छै ॥
हर्षक लहरि भरल चौरी मे जनु लोरिका के टाहि पर,
धान लोढ़इए वनवाला सन कृषक किशोरी पाहि पर;
अगहन जनु भिकभोड़ि जाइए रकटल नरक परान के,
सलहेसक महिमा वखानि क' सुमिरइए भगवान के,
सगर साल अनके हित बाँटल आइ गरीबक पार छै ।
जन-हरवाहक घर आँगन मे धनकटनी केर तार छै ॥
लुकभुक सुरुजक किरिन पड़इए झुकल धानकेर शीशपर,
हिड़ला पछवा हवा झुलय जनु जामुन तथा सिरीस पर;
अपसथांत भेलि बोझ उठौने दौड़ए नदी किनार मे,
धानक संग कंकण बाजइए काजर सन अनहार मे;
अगहन सपना जेकां विगत भेल, परस खेत उतार छै ।
जन हरवाहक घर-आँगन मे धनकटनी केर तार छै ॥

रेका-तोकी

एगारह बजे रातिमे एकाएक बिदेसरी आइ फेर गरजि उठल ।
गामक लोक ओकरासँ तँ ने आजिज छल । जखन-तखन ओ
कखनको गप्प सब मोन पाड़िकेँ चिकरऽ लगै छल । रातिकेँ
टोलाक लोकक निन्न बन्द; काज-करतेबता वाला ओतऽ पर-पाहुन
से सब हँसैत । ओ की बूझत, जे ऐ गाममे केहेन भगराहु सब
बसैए; एकर ओकरा कोनो गरज ने । ओ जखन गारिक भड्डी
लधै छल; तखन मुँह सुपुट किए करैत ओ !

एगारह बजे राति मे एकाएक बिदेसरी आइ फेर गरजि उठल । गामक लोक
ओकरासँ तँ ने आजिज छल । जखन-तखन ओ कखनको गप्प सब मोन पाड़िकेँ
चिकरऽ लगै छल । रातिकेँ टोलाक लोकक निन्न बन्द; काज करतेबतावाला
ओत पर-पाहुन से सब हँसैत । ओ की बूझत, जे ऐ गाममे केहेन भगराहु सब
बसैए; एकर ओकरा कोनो गरज ने । ओ जखन गारिक भड्डी लधै छल; तखन
मुँह सुपुट किए करैत ओ ! आ गारि से बूझ जेना कतौसँ ओकरा मङ्गनिऐ
भेटैत छलै; ताहुपर नवेनब गरहल नीक । मानू जकरा पढ़ैत छलै तकरा भीतर
तक छुबै । ओकरा ? दोहसाउत के ? डरै सब सकदम । ककरौ गारि सुनबाक
रहै तखन ने ? एखन जे ओ विणड़ल छल से ओ बलचनमा क बेटापर, ओ
ओकरा आठनामे फेंकि देने रहै, अपन अङ्गनाक नवे जनमल बिलाड़िक
बच्चा । आइ गेल छथि ओ विलड़ियाक बच्चे, एमहर लोक से सोचए,
आ—से सुनलक ओकर घर लग घर रहने चकदहवाली । गप्प बजरल ओइ
रातिमे चकदहवाली, आ—ओइ विदेशरीके । एक गोटे जोरसँ तऽ एक
गोटे मधिमसँ । मुदा—ओ रतुका गप्प समूचा गामक लोककेँ दलमलित केने
छल । किओ कहै—बिदेसरीकेँ हड़ही, तँ किओ कहे मुड़ही । निन्नो ने छुअऽ
दैए । चकदहवाली ! तँ परसँ आब ओइ बिदेसरीकेँ चासनी दैलए भेटिए
गेलै । सब निजगुत कऽ लेलक जे आब ई सभा भरि राति घेने रहत । अहर-
पहर ताकि एक दू गोटे चलल बिदेसरीकेँ बुझाबय; जे—राति भरि सूति

रह; भिनसर भगड़ा कऽ लिहें । आव की थीक—‘घेघ छल तोरा कि उछटि पड़ल मोरा’क कहबी भऽ गेल । नेनुआँ, अनुआँ दुनू गोटाकेँ ‘आबबिदेसरी डप-टए लागल जे एँ रों ? तों सब जे हमरा कहऽ एलेहेंसे की बलचनमाक कोनो पुरखा तोरा सबके पठैलको ए ? ईह; ओकर अगिमुतूकेँ हटवे नै करथीन आ हमरा सैतऽ ऐला हे । ओ सब कतबो बुझाअबै जे हमरा सब ओकरा दिस सँ नै ऐलौहें; ओहिना अपने फुरने कहए एलिआँ ए । मुदा, मानैए’के ? ई सब कहै जे भरि राति कथी लए सौँसे गौँआँ के जगोबहि ? तकर उत्तर दिअए ओ जे से की सौँसे गौँआँक निन्नेक ठीका तोँहीँ सब नेने छैँ ?

चकदहवाली से भिन्ने । ऐ मे आर ‘फोरन’ दैत कहै जे ओ छौँड़ा ? बड़नी लगौ धऽ के । एहेन अगत्ती छौँड़ा तँ देखवे नै केलौँ कत्तौ । हिनका लोकनिकेँ की बूझल छैन जे—ओ केहेन ऐछ । तैपरसँ ओकर माय-बाप से ओकरा आर बहसा देने छै ? अपन बेटाके सैतै जाएत कहाँसँ, जे-जे कहऽ जाइछै तकरै पर ठोहि ठोहि के उठै छै । एक दिनका हाल कहै छिएन—ऐ छौँड़ाक; मडनी ओ जगनाक बाप ? दुनू गोटाए सुनै जाथु । ई जे दुलरूआ टेढ़रहा ऐछ से कि ने अन्हरोखे एक दिन हमर एही पछवरीया घरक दावापर चढ़ि के हगैत रहै । हम की जानए गेलिए जे एहेन ई बहसल छौँड़ा ऐछ । हमहूँ जे ओही अन्हरोखेमे बहरेलौँ ओलक टोटी जे गाड़िकेँ रखने रही कोनटा लग तकरा उखारए । ओ तँ हमरा देखिकेँ करड़िक भौँभमे नुका रहल; मुदा एमहर हम जँ खुरपी चलबैत छी तँ से वजरल कऽ तँ सौँसे देहेपर । आव तँ मोन भिन-भिनाय लागल गन्धे ‘हम जे किने से’—ओकरा पोछऽ लगलौँ करड़िक डमखौर लगाकेँ । ओहो डमखौर कथीलए पकराइत जे पकड़ा गेल ओइ छौँड़ाक धड़िए । कपड़ा जखनै हमरा अभरल तखन हाथ बढ़बैत छी तँ साफ ओ छौँड़ा ? माटिकेँ पकड़ने दावा पर पड़ल । हम जे लगले ओइ छौँड़ाकेँ पकड़ने गेलौँ ओकरा अडना, ओकर माय-बापकेँ एकर करनी देखबै लए । मुदा, हाय रे राम ? के बुझै ? छन्दे हमरा जे बिदाइ भेल से हमही जनैत छी । तेँ कहै छिएन जे—कनेक ई लोकनि ओकरा लोक-बेदकेँ बुझबथुन जे एना धिया-पुताकेँ बहसौनाइ तँ ने नीक । नेनुआँ, ओ छनुआँ जे मडनी ओ जगनाक बाप छल । आव की कहि ओइ दुनू मुँहजोर मौगीकेँ मुँह सुपुट करत । कहलकै जे बरनी, से तँ आव भिनसर हेतै तखन ने ? एमहर बिदेसरीकेँ ई ‘बरनी’ सुनब जेना पएर तरक धरती केँ घुसका देलकै । तँ समहरि केँ आगू दिस बढ़ैत

आ—गरजैत बाजल—हँ हँ, भिनसर ओकरा ई सब भकसी भोंकि देखीन जहिना-तहिना तँ । जो जो, हम अपन अडनौमे बाजव सँ गेलौं । ई हमर घर थीक, तोरा सभक लागल नै । हम अपन चिकड़ितै रहव तै सँ तोरा की ?

आब तँ गौआँक जान आर अवगरहमे । पहिने एक मौगी छल, जकर सड पुरऽ लागल छल दोसरो । आब तँ ईहो दुनू गोटे चुप्प करऽ गेनिहार तैपरसँ वजै छल । से सभ जुटिके चारि गोटे भऽ गेल । कहै सब सबके जोरैसँ; से आर हल्ला मचा देलक । ओइ नेनुआँ ओ छनुआँक लोक-वेद सेहो लपैक पड़ल, अपन साँइक दिशसँ बाजए । कौआके तँ चाही गिद्ध सनक दोस्ती । आब किओ एहेन नै छल जेकरा निन्न नै टूटए । जँ पहिनेसँ जे सूतल छल तकरा आब निन्नो पुरिगेल छलैक । एकाएकी आओरो सब ओतऽ जूटए लागल । जे घरमे बैसल छल सेहो अपनामे एही दूनू मौगीक गप्प करैत । पूरापूरी तीन आब वजै छल । कतेक गोटाके आब ओ बिदेसरी आ चकदहवाली ऐ भगड़ामे बक्ता लेलक । जे सब ओकरा मना करऽ गेलै सेहो भगराहु; जे बल-चनमाक दोस्त-महीम रहै सेहो भगराहु; आ जतऽ बलचनमाक रोजी-रोटी चलैत रहै सेहो ओकरा दुनू गोटाके काल । एक घरक भगड़ा आब गाम भरिक रूपरङ्ग धऽ लेलक । एक दिश एसकरी ओ बिदेसरी । मुदा, की मजाल जे ओ दसो मौगी-पुरुष मिलाके ओइ बिदेसरीक मुँहमे भीक देत ? एना एकाएकी होइत गाम भरिक नै तँ टोल भरिक लोक धरि अवश्ये ओतऽ जमा भऽ गेल । पुरुष-मौगीक मुण्डे - मुण्ड ओतऽ देखि पड़ए । ताहूपर से कोराक दूध - पिहुआ सभक 'भें भें, चें चें' मानू जहाजक 'भों भों' क सडै-सड जेना जलक कलकल धुनि । किओ दौड़ैत; किओ खसैत, किओ अपन धिआ-पुताके पकड़ैत, ओतऽ जुटए लागल ।

आब तँ एगारह वजे रातिक लाधल छबक अमल बजवैत रहै । मुदा बिदेसरी टससँ मल नै । लोकक धरारोहि लधले बढ़ले सन छल । आब तँ पकड़लक एक दौरनिहारऐमे सँ जे नेनुआक बहु छल, तकरे भोंट कसिके बिदेसरी आ तैपरसँ बरिसबए लागल छुच्छी-लुच्चीक छोहिपर छोहि । संयोगसँ एही भीका-भोरीमे अडुरीपर ठाढ़ि आ भुकिके हाथ बढ़ौने बिदेशरी बेसी एक बेर भुकि गेने मुँहे भरे खसिपड़लि । नाकसँ शोनित, दाँतसँ दरदर शोनित बहैत बिदेशरी बेहोश भऽ गेल । आब भिन्ने हल्ला मचल । ई 'रेका-तोको' करैत बिदेशरी चुप्प तँ भेल, मुदा—अस्पताले जेबाकाल मुँह सापुट लेलकै ।

श्रीरामचन्द्रभा 'सुमन'

पाजेब

कथा-वस्तु यद्यपि नवीन नहि किन्तु ग्राम्य-जीवनक एक सुन्दर चित्रण एहि रचनामे भेटत ।

वृद्धा ओहि सुनसान घरकेँ तिरस्कारपूर्ण नजरि सँ देखि मुँह बिभिका लेलन्हि । ईह, जरलाहा घर-ओ मोने-मोने बजलीह, आर फेर बैस रहली । पुतोहु उठि गेल रहथिन्ह, पौत्र-पौत्री, सब आँगनमे धमगड्जर कऽ रहल छलैन्ह । वृद्धाक हाथ-पैर सगबगाय लगलैन्ह । मोन ऐहेन सन भेलैन जे बिना काज केने देहक थकनी दूर नहि हैत । हुनकर अंग-अंग टटा रहल छल । किन्तु ओ काज कियैक करतीह । जेकरा जे फुरै से करय । जखन सब गोटे घरमे आगिए लगाबए लेल तैयार अछि, त लगावऽ । हमरा की, हम तऽ पाकल आम जकाँ छी । आइ छी, काल्हि नहिए रहब । एतबैमे पुतोहु आविकय कहलखिन्ह—माय, एते तामस जुनि करौथु रातिओ ने खेलन्हि आर एखनो धरि ओहिना छथि । वृद्धाकेँ मोन भेलैन जे हम हिनका उचित आर अनुचित तामसमे अन्तर समझा दियैन, किन्तु ओ चुप्पे रहलीह । मोने-मोन कहलैन जे हम खाइ वा भूखले रही, एहिसँ अहाँके की ! पुतोहु थोड़ेक काल धरि ठाढ़ रहलखिन्ह—फेर दालि चढ़ा, गहूम पसारि थारी-बासन माज लय पोखरि गेलीह । वृद्धा मोने-मोन खौंभा उठली—ईह, बड़ काजूल बनली हे । कहै छै किदन तकरे परि जे 'किदन ने चले तऽ केराक भार' । आँगनमे गहूम पसारि कऽ आर दालि चढाक गेलीहे पोखरि । कौआ सबकेँ की लगतैक—दसटा जमा भक दस कौर लेत । पावभरि ओहिमे चल जायत ? दालि जरि जेतैन, तेकर ज्ञान नहि । किन्तु हमरा की, किछु होऊ । एतबैमे दालि जरऽ लागल । दुर्गंध वृद्धाक नाकमे पहुँचल । ओ मोन मारि कऽ रहि गेलीह ।

मुन्ना दौड़ल-दौड़ल हुनका कोरामे आविकय बैसि रहल आर कहऽ लगलैन—
दादी, माय कहै छथि जे अहाँ रूसल छी । कियैक रूसल छी, चलू ने दादो ।
हम अहींक संग खायब । चलू ने, हमरा भूख लागल अछि । वृद्धाक आँखिमे
नोर भरि आयल । ममता दबौलकैन, किन्तु फेर सोचलैन जे इहो पैस भ क
अपना बापे सन हैत ।

आर रामनाथ की एहेन छल । हम रूसी आर ओ वौसऽ नहि आवे । सवटा
एहि भगवतीक कृपा हेतैन्हि । सातटा बच्चाक माय भऽ गेलीह । तकलासँऽ
गोटेक आधे पाकल केस सेहो निकलि जायत । तखन सौख भेलन्हिहें
'पाजेब' पहिरैक । कहलकै जे 'सभ परियोग भऽ गेल बहुरिया पद धैले अछि' ।
हमरा की, हम त पाकल आम जकाँ छी । अपने भोख माँगत । हम कोन
वेजाय कहलियैक जे अन्नक भाव तेज हेतैक तखन वेचब त पाँच पैसा नफा
हेतौक । किन्तु आइ-काल्हि त लोक सभ बहुएक जुतिमे चलैए ।

हम जखन बिआहिक आयल रहो तखन की खाइक भौड़ सुतैक सेज नहि
छल । हमहूँ कि रामनाथक बापकेँ कहियो कोनो फरमाइश देलियैन्ह !
तेकर परसादे आइ तेरह बीघा जमीन अछि । किन्तु एकरा सभके कोनो ज्ञान
नहि । आइ पाजेब अनलक अछि काल्हि खन खेत बेचिकै जड़ाऊ कंगन
आनि दौक, परसू दरबज्जे-दरबज्जे भोख माँगत । वृद्धा ई सब बुदबुदाइत
फेर सुति रहलीह ।

रामनाथ खेत सऽ घूरलाह तऽ गृहिणी कहलथिन्ह जे माय रूसल छथि, हमरा
लाख वौसने नहि उठलीह । पहिने जाक हुनका वौसू तखन खायब । हम जनिताँ
जे पाजेब लेल माय रूसतीह तऽ कहियो नहि कहितौ । ई कहि, ओ
सन्नूकमे पाजेब राखऽ चललीह । रामनाथ सपथ दैत कहलथिन्ह जे
अहाँ के हमर सपथ थीक जे खोली, बड़ सुन्नर लगैए ।

किन्तु पहिने मायकेँ मनाऊ तखन पाजेब आ ताजेब—प्रत्युत्तरमे गृहिणी बज-
लीह एवं हुनका आँखिसँऽ टप-टप कऽ नोर वसुन्धराक सुकुमार वक्षस्थलपर
खसय लागल ।

रामनाथ दू बेर मायकेँ घरक दरबज्जा धरि गेलाह, किन्तु मायकेँ किछु
कहबाक साहस नहि भेलन्हि ।

ओ आँगनमे आवि कऽ बाजऽ लगलाह जे हम एकटा पाजेब आनि कऽ तोरा पुतोहु के देलियैक तँ तोरा आँखिमे कियैक गरै छौक । चीजो रहतौक तऽ बेचकुबेच घरेक क ज हेतौक ।

वृद्धाके बड़ तामस भेलैन्हि । ओ बजलीह—बेटी-पुतोहुक पहिरब-आढ़व ककरा नीक नै लगै छैक । किन्तु ततवे पैर पसारी जतेक कि परिस्थिति रहे । एहिमे मर्यादाक रक्षा होइत छैक । हम तऽ आव एहि घरमे एको क्षण नहि रहि सकैत छी । अपना बहिनौत लग चल जायब । ‘मुइला आगू डोम राजा’ । परोक्षमे किछु करब, तऽ हम रोक नहि ऐबह । ई कहि वृद्धा विदा भेलीह ।

पुतोहु पैर पकाड़ि कऽ कानय लगलथिन्ह । धिया-पुता लटैक गेलैन देहमे । किन्तु ओ मानयबाली नहि । टोला-परोसा बूढ़-पुरान सभ कहलखिन्ह जे—बहिनदाइ कतऽ जेतीह—चलथु हमरा ओहिठाम । परञ्च वृद्धा चुप्पे रहलीह, रामनाथ आवि कय कहथिन्ह—माय, हमरासँ अपराध भ गेल । आव मोन शान्त करऽ । भानस-भात बन्द अछि । यदि आवो शान्त नहि हेबह, त हमरो आइ एकादशिए करय पड़त । तोहर पुतोहु त रातिएसँ ओहिना छथुन्ह । से कियैक—वृद्धा अभिमानीनी जकाँ बजलीह—तोरा बिना नैखो ओने ओ फि आइधरि कहियो खेने दथि, से कि तोरा बुझल नहि छौक ? वृद्धा चुप्प रहलीह ।

रामनाथ कहलथिन्ह जे ई ‘पाजेब’ घर भरिमे विहाड़ि उठौलक अछि, हम एखने बाजार जाइ छी । ‘ने रहत बाँस, ने बाजत बसुली’ ई कहि ओ पाजेब लय बाजार दिस विदा भेलाह ।

थोड़ेकालक बाद वृद्धा पुछलथिन्ह—रामनाथ कतऽ गेल ।

पड़ोसिन कहलथिन्ह—मैयाँ, रामनाथ तऽ बाजार गेलाहे । पांजेब बेचैक लेल । तीसक चीज बीसीमे बिका जाइन्ह त भागे । आव कि बिना पाजेब बेचने हुनका शान्ति भेटतैन । वृद्धा चौक उठलीह—ऐं, तीसक बीसमे । ऐहेन अन्याय !! ऐं कनियाँ केकरो पठवियौक जे रामनाथकेँ घूमा आनत । कहतैक जे माय सपथ देलकौक अछि । ऐं, की कहू, ओ अपना बापे सन जिद्दी अछि । रामनाथ घूरि एलाह । पाजेब वृद्धाक आगूमे राखि देलखिन्ह । वृद्धा पुतोहुके सोरकऽ कहलखिन्ह—ऐ कनियाँ, एकरा पहिरू तऽ । देखू, केहेन लगैए ।

पुतोहु कहलथिन्ह—एखन रहऽ देखुन्ह माय, पहिरवे करबैक कि ने ।

वृद्धा गरजलीह—एखन पहिरय पड़त ।

ओ पाजेब पहिर लेलनि ।

वृद्धा पुछलथिन्ह—ठीक भेल कि ने । रामकेँ कि किछु कीनऽ - वेसाहऽ अव छैक ।

माय ! ठीक होइ छैक—ई कहैत ओ वृद्धाक पैरपर अपन मस्तक राखि देलथिन्ह ।

भगवान युग-युग अहिबाती राखथि; दूधे नहाऊ, पूते फुलाऊ—वृद्धा बजलीह आर पुतोहुक पैरमे पाजेब भुन-भुन कय मुस्कुरा उठल ।

ओम्हर मुन्ना रामनाथसँ पूछैत रहै—बाबूजी ! दादीके पाजेब नहि आनि देलियैन तँ रुसल छलीह । वृद्धा ई सुनिकए मुँहपर आँचर राखि हँसए लगलीह ।

—पापक प्रायश्चित्तक हेतु अपन मोनक नीक लगैवला सभ कर्मकेँ सेहो त्याग करवाक चाही ।

—जे प्रभु अपन लाखो शरणागतक सहायता कैलन्हि अछि से को अहाँके छोड़ि देताह ।

—अपराध नुकैल नहि जा सकैछ । ओ मनुष्यक मुखपर लिखल रहैछ ।

—बहुमतक संकेतपर चलब दासता थिक, यद्यपि ओकर निर्णय नीके क्यैक ने हो ।

माताक ममता

मैथिली-साहित्यमे लोक-कथा ओ कथाक कमी नहि अछि । एकर अन्वेषण बृहत् रूपेँ करब मैथिली-साहित्य-सेवीक बड़ पैघ उत्तर-दायित्व अछि ।

सोन सन लाल मुँहमे गुलाबी खिल्ली पानके दबवैत, देह ऐँठैत एक अष्टादशवर्षीया युवती, पानक दोकानपरसँ बीच सड़कपर आवि आगू बढ़-लीह । थोड़ेक दूर गेलाक बाद, एक सुन्दर आओर गठल शरीर, युवककेँ अपना पाछू अबैत देखलन्हि । युवक ओही युवती दिश तकैत उम्हरे जा रहल छलाह । भट ओ युवती मन्द मुस्कानयुक्त अपना भ्रू-धनुषकेँ उठवैत नेत्र-बाण छोड़ि पुनः आगू बढ़लीह । एक तऽ युवतीक रूप तथा वेष-भूषासँ युवक मोहित छलाह, ताहिपरसँ बाणक चोटसँ आर विमोहित भऽ अनायास युवकक पैर तेजीसँ युवतीक अनुगमन केलकैन्ह । युवती पुनः पाछू घूमि युवकक आँखि मिला मुस्काइत मन्द-गति सँ अग्रसर भेलीह । युवकक हृदय शक्तिसँ बाहर भै गेलैन्ह ।

जखन युवती देखलैन्ह जे हिनका हृदयमे बाणक घाव विस्तार भय गेलैन्ह आओर ओहि घावक मलहम हमरा छोड़ि दोसर नहि भऽ सकैछ, तखन ओ ठाढ़ि भऽ गेलीह । युवक तेजीसँ हुनका लग पहुचलाह ।

अपना लग ठाढ़ युवककेँ देखि कनेक वत्सस्थलक भाँकी देखवैत पुछलथिन्ह—
अहाँ हमरा पाछू-पाछू कियैक आवि रहल छी ।

युवक किछु सशंकित जकाँ उत्तर देलथिन्ह—ओहिना...अहाँके एम्हर मुँहे अबैत देखलहुँ तऽ हमरो इच्छा भेल जे अहाँसँ किछु गप करी । की, अहाँकेँ हम किछु पुछवाक साहस कऽ सकैत छी ? युवती निःसंकोच बजलीह—किछुये नहि जे पुछवाक विचार होवै से निःसंकोच पूछि सकैत छी, कोनो आपत्ति नहि हमरा, अपने लोक बूमू ।

युवक—धन्यवाद, हम ई पूछै चाहैत छी जे अहाँ एना बाजारपर आविकै लोकक हृदयमे बाण कियैक मारने फिरैत छियैक ?

युवती ठहठहाकेँ हँसि देलन्हि आओर बजलीह—ई तऽ हमर दोष नहि हमरा नेत्रक दोष थिक। बेश, ई गप सब छोड़ू, आखिर अहाँके कहबाक तात्पर्य की अछि से स्पष्ट भ क कहू।

युवक पुनः धन्यवाद दैत बजलाह—हमर हृदय अहाँक सुन्दरतासँ विमोहित अछि तैँ हेतु हम अहाँसँ प्रेम करऽ चाहैत।

ई सुनि युवती किछु सोचि बजलीह—अहाँकेँ के सभ छथि ?

युवक—हमरा माय छथि आओर कियो नहि।

युवती—हम प्रेम करबाक वास्ते तैयार छी कारण स्त्रीकेँ पुरुषक आओर पुरुष के स्त्रीक आवश्यकता रहितहि छैक किन्तु हम क्षणिक प्रेम नहि करै चाहैत छी, यदि प्रेम करी तऽ जीवन भरि कऽ हेतु।

युवक—तखन तऽ सोनमे सुगन्ध भऽ गेल, कोनो हर्ज नहि। हम तैयार छी।

युवती—किन्तु ताहिमे हमर एक नियम अछि।

युवक—कोन नियम ?

युवती—नियम ई अछि जे यदि अहाँ परीक्षामे! सफल भऽ जायब तऽ हम अहाँ के जीवन—संगी बना लेब।

युवक—कोन परीक्षा ! केहन परीक्षा ?? स्पष्ट कहू ?

युवती पुनः मुस्कराइत बजलीह—यदि अहाँ अपना मायक करेज काटिकै हमरा आनि दी तऽ आइ सँ हम अहाँक अर्धांगिनिये भ क रहब।

युवक—ई कोन पैघ गप्प भेल ई तऽ हम एखनहि आनि दैत छी हमरा एक तेज छूरा दिय तऽ।

युवती छूरा देलथिन्ह आओर नेत्रयुक्त कामान्ध युवक छूरा हाथमे लऽ घर दिश विदा भेलाह।

आह !...जे माता अपना दुःखक कनेको चिन्ता नहि कऽ। नओ मास पेटमे रखलथिन्ह, कतेक कष्ट सहि कै उत्पन्न कैलथिन्ह। पुत्रक जन्म सुनि कतेक हर्षने विभोर भऽ अपना सुखकेँ तुच्छ बूझि ओहि बालककेँ हेतु भरि-भरि रात्रि जागिकै प्रात करैत छलीह। बालक केँ कनेको कष्ट नहि होइन्ह तैँ हेतु दिन - रात्रि अपन छाती पर राखिकेँ दूध पियवैत छलीह। जखन बच्चा हँसैत छल तखन संसार भरिक सुखक अनुभव होइत छलैन्ह

सतत एहो ध्यानमे मग्न रहैत छलीह जे जखन ई बच्चा पैघ हयत तखन हमरा कोनो वस्तुक दुःख नहि रहत । कुलक नाम बड़ाओत इत्यादि अनेक प्रकारक कल्पनामे विभोर भऽ बालकक लालन - पालन, सेवा - शुश्रूषा मे रहैत साँझ आओर प्रात जखन भेल से किछु नहि बुझैत छलीह । किन्तु वैह कपूत कसाइ बेटा छूरा हाथमे नेने घर पहुचल तऽ माता केँ सूतल देखि परम प्रसन्न भऽ सूतलेमे, करुणा-सागरक करेज निर्दयतापूर्वक छूरा भोंकि, पानिसँ बहार कयल माँछ जकाँ छटपटाकेँ माताक करेज बहार कऽ लेलन्हि ।

माताक हृदयमे जतेक कल्पना भरल छलैन्ह से सभ कपूत बेटा एक पलमे बहार कऽ लेलकन्हि ।

भूट ओहि करेजकेँ हाथमे लऽ प्रसन्न भेल बाजार दिश दौड़लाह ।

राति अन्हार छल, मेघक घटा जोर छल, तकर कनेको चिन्ता नहि कऽ तेजीसँ युवक दौड़ल जा रहल छलाह । अकस्मात् एक ठाम ठोकर लगलैन्ह, युवक धड़फड़ाक खसि पड़लाह । हुनका खसैत देखि माताक करेजकेँ पुत्र-प्रेम उमड़ि गेलन्हि । पुत्रक निर्दयताकेँ एक दम विसरि गेलीह । हाथमे करेज वाजय लागल—हे हमर आँखिक दृष्टि ? हे हमर पुत्र ! हे प्रिय बच्चा ? अहा हा ! नूनू ? वौआ ? कहू तऽ अहाँकेँ कतौ कनेको चोट तऽ ने लागल ?...

—यदि कुम्हार घैलकेँ सुन्दररूपेँ निर्माण नहि कऽ सकल तँ घैलक दोष अथवा कुम्हारक ?

—यदि समाजमे तीनू वर्ण अभिमान करब त्याग नहि करत आर ऊँच-नीचक भेद मानबे करत तँ परिणाम ई हैत कि एहिमे कतेको उच्च श्रेणीवाला समाप्त भ' जैताह ।

इयरिंग

दू मास बितल, चारि मास बितल, 'मुदा इयरिंगक तगेदा बदले
गेल; विचारल, दिन-दिनक एहि रुसा-फुलीसँ, घरक महाजनक
तगेदाक डरै कतेक पड़ाए' परन्तु एहि दिनमे तँ मासभरिक अर्जत
दोसर मासक पन्द्रहे तारीख बितैत पार ।

बेसिक स्कूलक मनोरंजन-गृह मे गायक सभक भा' होइत छल—खन भालि-
मृदङ्गक भम्-भम्, हन्-हन्-खन ठहका—वाह, वाह, खूब नकल उतारलैन !...
मटरू रिक्शावाला लबनी पर लबनी चढ़बैत 'नाका'क पद चिचिआ' उठल,
नहि जानि दगरिन कण्ठमे कतेक हाथ देलकै.....सङ्ग-पुरनिहार सबकेँ
'नाका' प्रायः नहि पसिन्द पड़लै; केओ 'दयालसिंह'क टाहि लगौलक तँ केओ
'सूठी कुमरि' आ' केओ 'ढोलन सिंह' । कानक जड़ि उपड़ए लागल ।

घरक मलिकानि मुँह बिधुऔने बैसलि छलीह ।

पिरही कोनाह; भात-दालि सानि मुँहमे देल तँ सतुआक स्वाद बुझि पड़ल,
गिलासक पानि प्रायः भिनसुरके भरल ।

एना 'चून तमाकू किए बन्द' से भेद फोलबाक प्रयास करी तावत् मास दिनक
रोगी जकाँ कुहरिकेँ स्वर बहराएल :

कान खाली अछि; कहिआसँ कहैत छी; हम जेना क्यो नहि.....

से किए गहना सब की भेल ? तावत्.....

धुत् ! आव बीड़ - भुमकक युग छैक !.....

श्रीमती वर्मा 'हँ—मे—हँ' मिलबैत ओकालति उपसारलैन्ह—'हम तँ बीड़—
भुमक कहिआ ने फेक देल, राम राम ! केहन मतिछिन्नू आदमी एकर रेबाज
चलौलक से नहि जानि, ने सुरति, ने सीरति, पहिरू तँ जेना सड़कक 'रॉलर'
कानमे अँटक गेल रहए...। आव तँ इयरिंग...कनपासा...।

श्रीमहर कुलीक कुलाङ्गना लोकनि बेंगक श्राद्ध करैत 'जट-जटिन' केँ कण्ठ फाड़ि-फाड़ि श्रद्धाञ्जलि अर्पित करए लगलीहः

हाजीपुर हटिया बिसरंग बजरिया.....

मिस्टर वर्मा बेसिकस्कूलक शिक्षक, माथ सर आगुतोष मुखर्जी सन आ' बाँहि सन्त मल्लूकदासक, मुदा स्वभाव ओ बुद्धि विपरीत । आ' श्रीमतीवर्मा 'यद्रूपं तदाभूषणवाहनम्'; टोल-पड़ोस क स्त्रिगणक माइञ्जन, मिनट - मिनट केर समाचारपत्र; टोलभरिमे 'बहिनदाइ' नामसँ प्रख्यात ।

दू मास बितल, चारि मास बितल, मुदा इयरिंगक तगेदा बढ़ले गेल; विचारल, दिन-दिनक एहि रुसा-फुलीसँ, घरक महाजनक तगेदाक डरेँ कतेक पड़ाए' परन्तु एहि दिनमे तँ मासभरिक अर्जल दोसर मासक पन्द्रहे तारीख बितैत पार ।

हम पुछै छी आइकान्हि एतेक टाका कोन बाटेँ खर्च भ' जाइए, नववात तँ किछु नहि देखै छी ?

हम बाशमे फेक दै छी !! नैहर पठा दै छी !! एहन अविश्वास रहए तँ... हम कहिआ कहलहुँ जे टाका हमरे राखए दिअऽ ! —आ' मूड़ी नहि छीपलितहुँ तँ मनीवेग कपारे पर आबि खसैत ।

मिस्टर वर्मा बाहरसँ हाक देलैन्ह—औ टहलौ चलब की भरिदिन..., मामीजी दुखित छथि की ?

हँ, कान..... मुदा बीमारी नहि हड़ताल बुझू...।

हड़ताल !!!

किए स्त्रिगण हड़ताल नहि कए सकैछ ? पुरुष अधिकारक हेतु हड़ताल करैए, मौगी कानक हेतु, नाकक हेतु.....।

ठहाठही इजोरिआ । भरिबाट इयरिंग किनबाक योजनापर विचार करैत अवैत रही । बेसिक स्कूलमे कोरस शुरु भ' गेल रहए—गोटेक स्वरमे सोहर क भास, गोटेकमे समदाउनिक, गोटेक तर्ज सिनेमाक । जावत् सड़कक कातमे दूबिक आवरणमे कोनो वस्तु चकचकाइत नजरि पड़ल—देखल, इयरिंग... मुदा तल्लीहीन आ' बेजोड़ । ठीक अछि एकरे जोड़ा लगा देल जाए, आधा खर्च तँ बाँचि जाएत.....मुदा जँ टोल—पड़ोसक ककरो होइक ? तखन तँ मंगनीमे चोर कहाएब.....।

व्यर्थक अशान्ति बेसाहि लेल, सोन भेटल तैओ दण्ड, हेरा गेल तैओ दण्ड ।
कहूँ धोकड़ी टोवए लगतीह जँ नहिए मानतीह; कहतीह जकर हेतैक तकरासँ
हम अपन पटा लेब ।

चारिदिन ओकरा डाँड़मे खोसने-खोसने बीति गेल, तथापि मोहल्लामे इयरिंग
हड़एबाक प्रतिक्रियाक गन्धो नहि लागल । आधा भरिक इयरिंग मनपर मोन
भरिक भार लादि देलक । निश्चय कएल, एकरा शीघ्र सुठाम पठा दी आ'
साँभू पहर टहलैत-टहलैत चुपचाप ओकरा गण्डकीमे भसा देल—गण्डकी जँ
सदानीरा थिकीह—शिव-पार्वतीक संयुक्त करसँ उद्भूता—घी कत' हराएल तँ
राहड़िक दालि मे ।

आन दिनक अपेक्षा किछु सवेरे निन्द आवि गेल, बेसिक स्कूलमे सुतवाक घंटी
कखन बाजल से किछु नहि बुझलएक ।

प्रायः आधा राति बितल होएत की एकाएक निन्द टूटि गेल, बुझि पड़ल केओ
माथक केश दूहि रहल अछि ।

के ?

हम...छी !

की भेल ?

नहि.....ओहिना...

तँ विना प्रयोजन एतेक रातिकेँ निन्द मे बाधा देबाक कोन काज !

किछु कहवाक...छल, मुदा...

साहस नहि होइत अछि; बेस, भरि राति साहस जमा करू, भिनसर नीक
जकाँ कहि देब...

वात छल...अहाँ सँ...अहाँ सँ...नुका'केँ थोड़ेक टाका ।बचा'केँ...इयरिंग ।

से की भ गेल ??

आइ बड़की दाइक संग कनेक कमौआ स्कूल आ' कुलीक अखरहा लग गीत
सुनए गेलिए कतए दन एक कानक इयरिंग...

हम दहिन करोटसँ बाम करोट ध' लेल—आरिक चूकल गृहस्थ, डारिक
चूकल वानर.....

बेस, कोनो चिन्ताक गप नहि; एक कानक बाँचि गेल कि ने ।

सर्वनाशे.....अर्द्ध त्यजति पण्डितः ।

रिफन

डाक्टर नहि बुझि सकलाह जे ओ आनन्दक अश्रु छल वा रिफनक महान्ताक प्रति कृतज्ञताक ।

भरि दिनमे ओकरा एतेक आमदनी भ जाइत छलैक जाहिसँ ओकर जीवन-रूपी नाव आनन्दसँ एहि मायावी संसारमे घुसकल जाइत छलैक । जे ओकरा रिक्सा पर एक बेर जाइत छल से ओकर स्वभाव एवं उचित भाड़ा लेब देखि अवश्य सोचैत छल जे कतेक अन्तर छैक एहि रिक्साबला मे आर अन्य रिक्साबलासँ । किन्तु क्रमे-क्रमे बाजारमे रिक्साक संख्या भारतक जन-संख्या जकाँ बढ़ लागल । चमकैत गद्दीदार सीट आओर ओहिसँ नीचांमे मोनाकुमारी—नरगिसक फोटोबला रिक्सा लोककेँ बेसी पसीन्न होम लगलैक । एहिसँ रिफन पर सेहो प्रभाव पड़लैक । सतत बिहुसति रहैबलाक मुखाकृति पर मकड़ाक जाल जकाँ चिंता पसरि गेल छलैक । किन्तु एहिसँ ओकर स्वभावमे एवं सवारी सबहक संग व्यवहारमे कोनो अन्तर नहि भेल छलैक ।

एक दिन जाड़क संध्यामे रिफन भरि दिनक कमाइके गनि रहल छल । रहि-रहिक ओकरा स्मरणे आखिरी सवारीक व्यवहार नाचि उठैत छलैक । जकसनसँ तीन सवारी टावर अनने छल । जकर उचित किराया आठ आना देवाक चाही । किन्तु ओ देने छलैक केवल तीन आना ।

भरि दिनुक कमाइ के ढ़ठामे खोसि डेर बिदा भेल । जखने किछु दूर गेल हैत कि एक आधुनिक कपड़ासँ विभूषित व्यक्तिक कड़ा शब्दसँ ठाढ़ भेल । सवारी अविते हुकूम देलकैक—प्रकाश चलो ।

सरकार ! हम नहि जा सकब ।

क्यों ?

भरिदिनुक भूखल छी । हम नहि जा सकब ।

• एतेक सुनैत देरी सूट-बूट धारो पैजामासँ बाहर भ गेलाह—नहीं जायगा ?
क्यों नहीं जायगा ? जल्दी चलो 'शो'का समय हो गया है ।

सरकार ! हम नहि सकब ।

साला ! हरामी !!

गारि सुनैत देरी रिक्शन के सेहो एड़ीसँ टिकासन धरि लेसि देलकैक । हम
भूखल छी । नहि सकब । आ हिनकर सेखी देखू त । नहि सहाज भेलैक ।
आर ओम्हर त गारिक बाढ़ि आबि गेल छल ।

सरकार ! कियैक व्यर्थ गारि द रहल छी ?

एतैक सुनैत देरी हुनकर क्रोधमे जेना घी पड़ि गेल हो । आव गारिक संग
प्रहार सेहो प्रारम्भ भ गेल । असहाय—निर्वल रिक्शन बेहोश 'भ'क सड़कपर
खसि पड़ल । मस्तकसँ शोणितक पमार चल लागल ।

अपन बहादुरी पर छाती तानि हिन्दुस्तानी साहेब चबबनियाँ मुस्की दैत—
बाँहि टेढ़ करैत दोसर रिक्साक खोजमे बिदा भ गेलाह । जेना कोनो यात्री
रास्ता परहक कूकूर के दू घेपा देलाक बाद बिदा भ जाइत अछि । लोको सब
रिक्शन के दोष दैक । कियैक ओ दरोगाजीक जमाय केँ जबाब देलकैन्ह ।
ओहि दिनुक बाद कियो रिक्शन के ओहि महल्लामे रिक्सा चलबैत नहि
देखलक ।

तीन चारि दिनसँ रिक्शन मलेरिया आ शूलसँ पीड़ित छल । दुर्बल ततेक भ
गेल छल जे दवाइक टाकाक लेल किछु परिश्रम करितै सेहो नहि । भरि दिन
घामे पड़ल अपन अतीतक पृष्ठ उनटबैत छल । कोना जीवनक बीस वसंत
ओ शांतमय वातावरणमे जतय शहरक छल - प्रपंची सँसारक कोनो छाप
नहि कटने छल । तकरा बाद गामक जुल्मी जमीन्दारक कोप - दृष्टिक
चलैत एहि कोलाहलपूर्ण स्थानमे आबि दिन काटि रहल अछि ।

करीब बारहक समय हेतैक । रिक्शन दर्दसँ व्याकुल भय छटपटा रहल छल
की कियो केवाड़ खटखटौलकैक ।

के ?

हम ! एक अपरिचित...कनेक बाहर आवह ।

कहुना रिक्शन केवाड़ फोललक । देखैत अछि एक बारह - चौदह बर्षक बालक !
ठाढ़ भेल ।

की अछि ?

रिक्साक.....

नहि ! हमरा सक नहि अछि जे रिक्सा चला सकब आ पुनः केवाड़ बन्द कऽ लेलक ।

किछु कालक बाद कियो फेर केवाड़ खट-खटौलकैक ।

कहि त देल हम नहि जा सकब । हम असमर्थ छी । कोनो दोसर रिक्सा ताकू । कनेक केवाड़ त खोलह ।

की करैत । केवाड़ खोललक त देखैत अछि ओहि दिनक साहेब केँ पहिने आयल बालकक संग ।

देखैत रिक्सा केँ ओहि दिनक घटना स्मृति पर निखरि गेलैक ।

की रिक्सा चलबैत छह ?

हँ ! किन्तु नहि जा सकब ।

कियैक ?

हमर खुशी थिक । ई हमर घर छी, टावर नहि ।

ओहि गप्प केँ बिसरि जाह । दिनक दोष छलैक ।

हम नहि जायब ।

एतैक कहि जहाँ ओ जाय लागल की ओकर नजरि गेलैक बालकक मुखाकृति दिस जकर आँखि डबडबायल छलैक । ओ कह लगलैक—नहि जेबह । नहि जा । किन्तु तों अस्पताल धरि चलितह त हमर बहिनक प्राण बचि जेतैक ।

एखन आन कोनो रिक्सा नहि भेटैत छैक । जे लेबह से देबह हम । ई हम एक रिक्सावला नहि बुझिक कहि रहल छियौह । एक भाइक सम्बन्धसँ ।

एतवा सुनैत देरी रिक्सा लक विदा भ गेल ।

अस्पताल पहुचलापर रोगिणी केँ ल जेबाक कालमे ओ शोणितसँ लतपथ साझी देखलक त ओकर आत्मा कुहरि उठलैक । किन्तु ई नहि बाचल त एकर मृत्युक कारण हमही हैब । ओ विना किराया नेने जाहि लक चारि दिनक भूखल पेटक भूखकेँ शांत क सकितै बिदा भ गेल ।

भोर आठक समय । सड़क पर चहल - पहल प्रारम्भ भ गेल छल । राकेश (दरोगाजीक जमाय) अस्पताल जा रहल छला कि रास्ताक मेला देखि ओहो देख लगलाह । किछु नहि छल । सड़कपर रिक्साक मृत शरीर पड़ल छल जे रात्रिमे जर्जर शरीर मेहनत करबाक कारणे प्राणसँ हाथ धोने छल ।

अस्पतालमे राकेश अपन स्त्रीकेँ जे रिक्साक चलते बचि सकल छलीह, रिक्साक मृत्युक समाचार सुना रहल छलाह कि डाक्टर आवि गेलाह ।

संयोग छल राकेश बाबू जे अहाँ हिनका समय पर अनलियैन्ह । नहि त... ई सुनैत देरी राकेशक आँखिसँ नोर बह लागल ।

डाक्टर नहि बुझि सकलाह जे ओ आनन्दक अश्रुछल वा रिक्साक महान्ताक प्रति कृतज्ञताक ।

लोरी

प्रोफेसर श्रीशैलेन्द्रमोहनभा

नील गगन मे चन्दा दुलारु
पञ्चोलक निनिया केर कोर ।
छोट छोट तरेगण केर फिलमिल अँखिया
होमय अछि लागल विभोर ॥

सूति रहू सूति रहू राजा दुलरुआ आवि गेल रतिया रे ।
निनिया रानी आवि सजाओत
सपना केर सुन्दर संसार ।
आओत परी सभ सजिधजि सुन्दरि
कैने सोलहो शृङ्गार ॥

रानी परी केर भुलबा भुलाओत जोड़त पिरितिया रे ॥
सूति रहू सूति रहू राजा दुलरुआ आवि गेल रतिया रे ॥
सपना केर नगरीमे फुलबाक बगिया
तितलोक होइक सिंगार ।
नव नव संगीक संगमे खेलाएत
हम्मर ई राजकुमार ॥

निनिया केर कोरमे भैया बहिनियाक बिसरत सुरतिया रे ॥
सूति रहू सूति रहू राजा दुलरुआ आवि गेल रतिया रे ॥

भाँटाक नोकर नहि, सरकारक नोकर

श्रीबचकुनमिश्र

कतहु एक राजा छलाह, हुनका एकटा मन्त्री छलथिन्ह ॥ एक दिन राज-
सभा लागल छल । गप्प पर गप्प चलि रहल छल । राजा बजलाह जे भाँटाक
तरकारी खैवा मे बड़ दिव होइत अछि । ताहिपर मन्त्रीजी बाजि उठलाह
जी, सरकार । सबसँ विलक्षण तरकारी भाँटेक होइछ । किछु दिन
वितलाक बाद राजा कहल—औ ! तरकारोमे सबसँ बूड़ि तरकारी भाँटाक
होइत अछि । मन्त्रीजी कहल—जी सरकार । तरकारीमे एहेन बूड़ि एकोटा
नहि । राजामन्त्रीसँ कहल—एँ औ ! हम एक दिन कहल जे भाँटाक
तरकारी बड़ दिव होइछ तँ अहूँ कहने रही जे जी सरकार यथार्थे भाँटाक
तरकारी महा विलक्षण होइत अछि । मुदा आइ हम कहैत छी जे बड़ बूड़ि
तरकारी होइछ तँ अहूँ कहैत छी—सरकार यथार्थे बड़ बूड़ि होइछ । मन्त्री
कहल—सरकार हम तँ भाँटाक नोकर नहि, हम तँ सरकारक नोकर ।
सरकार जैह कही सैह ने नीक ।

एक समस्या

प्रत्येक देशमे विशिष्ट नव-निर्माणक युग अबैत छैक । कहबाक नहि होएत जे ओहि युगमे देशक आर्थिक, राजनैतिक विकासक संग साहित्यिक एवं सांस्कृतिक नव-निर्माण होइछ । देशमे नवीन चेतनाक प्रादुर्भाव होइछ । देशक जे भाग एहि चेतनासँ स्पन्दित नहि होइत अछि से पछुआएल रहैत अछि आओर ओहिमे बासकएनिहारक जातिगत विशिष्टता, हुनक संस्कृति एवं सभ्यताक अनुरंजन सर्वदाक हेतु समाप्त भए जाइत छैन्हि ।

आइ अपन देशमे नव-निर्माणक स्वर्ण-युग वीति रहल अछि । देशक विविध विकास भए रहल अछि । देशसँ अँगरेजक चलि जएबाक उपरान्त भारतीय भाषा एवं साहित्यक जे द्रुत विकास भए रहल अछि से देश-जागरणक नवीन करोट थीक । अपन मातृभाषाक सेहो उन्नति प्रारम्भ भए गेल, मैथिली साहित्यहुँमे नवीन चेतनाक स्फुलिंग बहार होअए लागल अछि । किन्तु ई नग्न सत्यकेँ बिसरब अपनाकेँ भ्रममे राखब होएत जे अपन साहित्यमे नवीन रचनात्मक प्रतिभा होयतहुँ अपन साहित्यकार मध्य जे असहयोग, ईर्ष्या एवं विद्वेषक कटु

गन्ध अछि से अपन साहित्यकेँ नव-निर्माणक दिशामे द्रुतगतिँ बढ़वासँ अक्षम करैत अछि ।

अन्य भाषा एवं साहित्यक सदृशहिँ मैथिली भाषा एवं साहित्य आगू बढ़ि रहल अछि । अपन कर्मक उचित पुरष्कार नहि पवितहुँ जाहि रूपेँ साहित्यकार अपन साहित्य-कृतिक सृष्टि कए रहल छथि से कोनो भाषा एवं साहित्यमे दुर्लभ अछि । किन्तु एहि नवजागरणक लहरिमे जे किछु प्रतिकूल व्यवधानक विषाक्त वातावरण सृष्टि भए रहल अछि ताहिसँ भय अछि जे कदाचित एहिसँ अपन साहित्यक प्रगतिमे किछु अकल्याण नहि हो ।

अपन भाषा मध्य साहित्यक विविध अङ्ग दिशि विशेष आकर्षण भेटैत अछि । उपन्यास, कथा, गल्प, कविता, एकांकी, नाटक आदिक संग आलोचना-प्रत्यालोचना सेहो लिखल जाए लागल अछि । सत्-आलोचनासँ साहित्यक प्रगतिक पथ आओर प्रशस्त होइछ । किन्तु सत्-समालोचनासँ जतबा साहित्यकेँ उपकार होइत अछि ओतबा असत्-समालोचनासँ अनुपकार । हमरा कहए नहि पड़त जे